आरती मां शारदा जी की

बारम्बार प्रणाम मैया, तुम्हें बारम्बार प्रणाम ।
जो नहीं ध्यावे तुम्हें, शारदे! उसे कहां विश्राम ।। टेक ।।
सरस्वती है नाम तिहारो, लेत होत सब काम ।
प्रलय, युगान्तर और जन्मान्तर, कालान्तर तक नाम ।।
स्वर और सुरों की रचना करती कहां कृष्ण कहां राम ।
चूराहि चरण चतुर चतुरानन, चारु चक्रधर श्याम ।।
चन्द्रचूड़ चन्द्रानन चाकर, शोभा लखहिं ललाम ।
त्राहि-त्राहि शरणागत-वत्सल, शरण रूम तव धाम ।।
श्री हीं श्रद्धा, श्री ऐं विद्या, क्लीं से कला नाम ।
कान्तिभ्रान्तिमयी, कान्तिशान्तिमय, वर देउ निष्काम ।।

विवरण

हे शारदा मइया आपको हमारा बार - बार प्रणाम है । जो आपकी पूजा से वंचित रहता है, उसे कभी भी आराम नहीं मिल पाता है । आपका सरस्वती नाम लेने से जग के सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं । युगों के अन्त तक, जन्मों के अन्त तक और समय के अन्त तक आप ही का नाम है ।

आप स्वर एवं सुर की उत्पति करने वाली हो आपके समक्ष राम और कृष्ण कुछ भी नहीं हैं । आपके शरण में आकर आपके परम स्नेही अपनी रक्षा की पुकार करते हैं । आपके श्री हीं श्री ऐं क्लीं मन्त्र का मतलब होता है कि आप श्रद्धा,विद्या एवं कला के नाम से उजागर हो । हमारे मन को शान्त बनाने का आर्शीवाद दीजिए तथा हमारे सभी कार्यों को सफल बनाईये ।